The ARTist International: A Multidisciplinary Journal Dedicated to All Artist
Vol. 3, Issue 1 – 2019
ISSN: 2581-5393

हिन्दी साहित्य में यात्रा वृतांत

सुषमा बिस्वास

जब कोई अपने द्वारा की गई यात्रा का कलात्मक एवं साहित्यिक विवरण प्रस्तुत करता है, तो वह यात्रा वृतांत कहलाता है। कई साहित्यकारों की अपनी यात्राओं का वर्णन संस्मरण रूप में हमारे सामने प्रस्तुत है उनका उद्देश्य मात्र मनोरंजन न होकर देश.विदेश की यात्रा कर वहाँ की जीवन शैली, परम्परा, सौन्दर्य, प्रकृति का चित्रण प्रस्तुत करना होता है। जैसे साहित्यकार मणिका मोहिनी की यात्रा वृतांत में दर्द, कसक महसूस होती है, यात्रा वृतांत के माध्यम से हम लिखने वाले के व्यिंक्तत्व से भी परिचित हो जाते हैं। मणिका मोहिनी के यात्रा वृतांत से उनके शांत, गंभीर व्यक्तित्व, दर्द व पीड़ा का अनुभव होता है। उनका 'शिमला के बहाने सेः कुछ पुराने दर्द' यात्रा वृतांत है। अतः इनका कहना है कि "शिमला अब वह शिमला नहीं रहा" अब पहले सी घाटियां व ठण्डक महसूस नहीं होती है। वहाँ का वातावरण, संस्कृति परिवर्तित हो गई हैं। वे अपने पुत्र को वहाँ के बिशप कॉटन स्कूल में एडमिशन अपनी मजबूरियों व अपने अकेलेपन की पीड़ा से उसे सुरक्षित रखने हेतु करवाती है।

"मेरे बेटे!
मैं अपनी जिन्दगी के विरोधाभासों की कहानी
तुझे कैसे सुनाऊँ
नहीं समझेगा माँ का अकेलापन"1

वहीं अज्ञेयजी के यात्रा वृतांत में रचनात्मकता के दर्शन होते है। अज्ञेयजी स्वयं यायावर प्रकृति के थे। उनका उद्देश्य भी स्थान विशेष की संस्कृति से परिचित कराना ही है।

आंचलिक उपन्यासकार रेणुजी इस विद्या को नई भंगिमा देते है। इन्होंने दो संस्मरण लिखे दोनों में यात्रा का वर्णन बड़ा भयावह है। सन् 1966 में दक्षिण बिहार में पड़े सूखे के वक्त की यात्रा व 1975 में पटना और आसपास के क्षेत्र में बाढ़ की भयावह घटना को उन्होंने करीब से देखा और दोनों ही संस्मरणों में मानवीय करूणा दिखाई देती है।

मोहन राकेश के यात्रा वृतांत में नये संसार को जानने की ललक दिखाई देती है। इन्होंने गोवा से कन्याकुमारी तक की यह यात्रा सन् 1952.53 में तीन महिनों तक की। इन्होंने यह वृतांत "रास्ते

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

के दोस्तों" को समर्पित की, साथ में यह जोडते हुए, "पश्चिमी समुद्र.तट के साथ साथ एक यात्रा"2 यह इनकी पहली यात्रा थी। इसमें बीच.बीच में अनेक दिलचस्प हमसफर चरित्रों से दो.चार करते हुए इस यात्रा वृतांत को लिखा गया। इसको हम एक कहानी की भाँति पढ सकते है।

चीड़ो पर चांदनीः के लेखक निर्मल वर्मा को हिन्दी लेखकों में अज्ञेय के बाद विदेश यात्रा का सुयोग मिला। इन्होंने अज्ञेयजी की भाँति ही अपने यात्रा वृतांतों का उद्देश्य सैर.सपाटा नहीं माना। निर्मल वर्मा की विदेश यात्रा मात्र पर्यटक की सैर नहीं हैं। वे जर्मन में अपने साथ नाटककार ब्रेख्त को साथ लिये दिखाई पडते है। कोपनहेगन में दूसरे यूरोपिय देशों की मौजूदगी भी साथ रहती है। इनके सबसे महत्वपूर्ण दो यात्रा संस्मरण आइसलैण्ड के है। आइसलैण्ड की नदियों और क्षेत्र की साहित्यिक संस्कृति का आँखो देखा वर्णन हिन्दी में इससे पहले शायद ही देखने को मिलता है।

रामकुमार वर्मा वर्ष 1950.51 में वे पेरिस के आर्ट स्कूल में रहे उस वक्त ये यूरोप देशों की सैर को निकलते रहते थे। "यूरोप के स्केच" यात्रा वृतांत के अंतर्गत "नए.नए शहर, नई.नई भाषाएं, नए.नए लोग और मैं अकेला निरूद्देश्य यात्री की भांति सुबह से शाम तक सडकों, गलियों, कैफों और संग्रहालयों के चक्कर लगाया करता।"3

अमृतलाल वेगड सरस यात्राओं हेतु पहचाने जाते है। इनकी यात्राए बड़ी विकट भी हुआ करती है। वेगडजी चित्रकार, कला.शिक्षक थे, अतः उनकी यह प्रवृति उनके यात्रा वृतांत को चार.चाँद लगा देती है। इनकी यात्रा.त्रयी "सौन्दर्य की नदी नर्मदा, अमृतस्य नर्मदा, तीरे.तीरे नर्मदा हैं।"

नर्मदा की यात्रा के दौरान रास्ते में आए कई स्थानों के रहन.सहन, खान.पान, पहनावा, धर्म आदि से भी परिचित होते जाते है। वेगडजी ने कदम.कदम पर नर्मदा के आस.पास के लोक.जीवन, लोक.संस्कृति का चित्रण किया है। नर्मदा मात्र एक नदी न रहकर एक जीवन्त शख्सियत की भूमिका निभाती है। वेगडजी का विनय देखिये वे लिखते है।

"कोई वादक बजाने से पहले देर तक अपने साज का सुर मिलाता है, उसी प्रकार इस जन्म में तो हम नर्मदा परिक्रमा का सुर ही मिलाते रहै परिक्रमा तो अगले जन्म से करेंगे।"4

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

सौन्दर्य की नदी नर्मदा के अन्तर्गत यात्रा करते हुए प्रकृति व संस्कृति की अद्भूत चित्रात्मक भाषा में वेगडजी ने वर्णन प्रस्तुत किया है।

साहित्यकार कृष्णनाथ अर्थशास्त्री व बौद्ध धर्म के अध्येता थे। मगर वे यायावर प्रवृति के होने के कारण हिमालय की सैर बार.बार किया करते थे। इन यात्राओं के दौरान कृष्णनाथजी ने बौद्ध धर्म का अन्वेषण भी किया साथ ही हिमालय अंचल की लोक.संस्कृति का भी बहुत ही आत्मीय व रोचक ढंग से वर्णन अपने वृतांतो में करते है।

इनकी यात्रा त्रयी कवि कमलेश द्वारा प्रकाश में लायी गई। इसी प्रकार कुमाऊँ क्षेत्र पर भी यात्रात्रयी का सिलसिला देखने को मिलता है।

"स्पीति में बारिश" वृतांत के दौरान कृष्णनाथ बारिश ढूंढते है और पाते है स्नेह की, ज्ञान की, परम्परा की, संस्कृति की और मानविय रिश्तों की बारिश। कृष्णनाथजी के सरस व लयपूर्ण छोटे-छोटे वाक्यों में गहरे अर्थ की भाषा छिपी होती है।

जैसे "विपाशा को देखता रहा, सुनता रहा, फिर जैसे सब देखना सुनना सुन्न हो गया, भीतर बाहर सिर्फ हिमवान, वेगवान प्रवाह रह गया न नाम, न रूप, न गंध, न स्पर्श, न रस, न शब्द, सिर्फ सुन्न, प्रवाह अन्दर बाहर प्रवाह यह विपासा क्या अपने प्रवाह के लिए है।"5

इसी प्रकार "घुमक्कड शास्त्र के प्रणेता महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन भी जीवन भर भ्रमणशील रहै इनकी यात्रा का उद्देश्य क्षेत्र के इतिहास, भूगोल, वनस्पति, लोक.संस्कृति आदि अनेक जानकारियों को जुटाना है।

अतः हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत यात्रा.वृतांतों का उद्देश्य मात्र सैर.सपाटा या मनोरंजन न रहकर हमें स्थान विशेष की संस्कृति, सामाजिकता, जीवन शैली व स्वयं साहित्यकार के व्यक्तित्व से

परिचित कराता है। जो पाठक के ज्ञानार्जन में सहायक सिद्ध होता है।

सदर्भ ग्रंथ सूची

1. मणिका मोहिनी, शिमला के बहानेः, कुछ पुराने दर्द।
2. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन, दिल्ली।
3. रामकुमार वर्मा, युरोप के स्केच।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

4. अमृतलाल वेगड, तीरे.तीरे नर्मदा।
5. कृष्णनाथजी, स्पीति में बारिश।
6. निर्मल वर्मा, चीड़ों पर चाँदनी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन, किन्नर देश में।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.